ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर

जनाब पंडित व्यास देव मिश्रा साहब, जज, हाईकोर्ट, दिल्ली

"ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है।" ये है इमाम हुसैन[अ०] की वह बात जिस पर कर्बला की जंग हुई। और यही वह बात है जिस पर दुनिया आख़िर तक चलती रहेगी।

इसमें दो चीज़ें बहुत ग़ौर करने वाली हैं। यानी इज़्ज़त क्या है और ज़िल्लत क्या है? आम दुनिया के नज़दीक इज़्ज़त वह है जो आम तौर से इन्सान दूसरों को देख कर कहा करते हैं कि फ़लां शख़्स माल और दौलत रखता है, बड़े मरतबे वाला है, शान और शौकत का मालिक है और बड़ा ही इज़्ज़त वाला है। उनकी सोच ये है कि बग़ैर इन चीज़ों के इज़्ज़त नहीं मिलती। मगर ये इन्सान की बहुत बड़ी ग़लती है कि वह माद्दी (Meterial) और ख़त्म हो जाने वाली चीज़ों को इज़्ज़त का नाम देता है। हक़ीक़त में इज़्ज़त वह है जो ख़ुदा ख़ुद देता है और यही इज़्ज़त कभी न ख़त्म होने वाली है। अगर एक मालदार को ख़ुदा ने इज़्ज़त नहीं दी तो यक़ीनन वह हमेशा ज़लील रहेगा। बस आप इस बात को सामने रखते हुए देखें कि हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने अपनी ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारी।

शुरु से लेकर आज तक ज़िन्दगी का मक़सद इसी क़ौल के मुताबिक़ हासिल किया जाता रहा है। अगर इज़्ज़त सिर्फ़ माल और दौलत, हुकूमत और शोहरत से होती तो ख़ुदा के रसूल[स०] अपने लिए बड़े-बड़े महल बनाते, दौलत इकटठा करते, और क़ीमती कपड़े पहनते, मगर आप देखेंगे कि उन्होंने ऐसा नहीं किया, और फ़क़ीरों वाली ज़िन्दगी गुज़ारी। दुनिया ने ज़लील करना चाहा और दुश्मनों नें रास्ता चलते वक़्त हज़रत[स०] पर कूड़ा-करकट फेंका और ज़लील करना चाहा। मगर इन बेकार की बातों से आपकी इज़्ज़त में कुछ फ़र्क़ न आया बल्कि आपकी इज़्ज़तत और बढ़ गयी और दुश्मन ज़लील होते रहे।

हज़रत अली[अ०] की भी मिसाल लीजिए। जब बैतुलमाल में कुछ रुपया जमा होता, अपने ग़ुलाम से कहते जाओ सब कुछ ग़रीबों और मिस्कीनों को बाट दो। और आप ख़ुद अल्लाह के ज़िक्र में लग जाते। जब ग़ुलाम सब कुछ बाट कर आपको ख़बर देता तो शुक्र का सजदा अदा करते। उनकी नज़र में माल और दौलत की बस इतनी ही क़दर थी कि वह जल्दी से जल्दी उसके हक़दारों तक पहुँचा दें और ख़ुदा के दरबार में इज़्ज़त वाले हों।

इसीलिए अल्लाह के रसूल[स०] ने हमेशा यही दावत दी कि दुनियावी इज़्ज़त और सरदारी की चाहत न होनी चाहिए, हमेशा सीधे रास्ते पर चलना चाहिए ताकि मरने के बाद अल्लाह इज़्ज़त बख़्शे। आपने अपने अख़लाक़ और किरदार से हिदायत की। मगर ख़ुदा के रसूल[स०] की आँख बन्द होते ही दुनिया उनके बताये हुए रास्ते को भूल गयी और रसूल[स०] के अहलेबैत[अ०] पर मुसीबतों की शुरुआत हो गई। वह मस्जिद जिसमें पनाह मिलनी चाहिए, उसी में रसूल[स०] के जानशीन हज़रत अली[अ०] को शहीद कर दिया गया। हज़रत इमाम हसन[अ०] ने पूरी हुकूमत और बादशाहत को ठुकराकर लड़ाई को ख़त्म कर दिया और सुल्ह करके अम्न क़ायम किया। इसके बाद भी उन्हें ज़हर देकर शहीद कर दिया गया। और किसी ने इस जुर्म की तहक़ीक़ न की। बात आई-गई हो गई, राज़, राज़ में रह गया।

अब इमाम हुसैन[अ०] की बारी आई, कुछ लोगों का ख़याल है कि इमाम हुसैन[अ०] ने हुकूमत के लिए लड़ाई की। ये ख़याल बिलकुल ग़लत और बेबुनियाद है। अगर इस बात के लिए लड़ाई करना होती तो उस वक़्त लड़ाई शुरु कर देते जब इमाम हसन[अ०] के जनाज़े पर तीर बरसाए जा रहे थे मगर न उस वक़्त जंग की और

न उस वक़्त तलवार उठायी जब मुआविया ने सुल्ह की शर्त के ख़िलाफ़ किया था, इमाम ख़ामोश रहे और भाई की सुल्ह को क़ायम रखा।

कुछ लोगों का कहना है कि जब इमाम हुसैन[अ०] जंग के ख़िलाफ़ थे तो ऐसी जगह और ऐसे लोगों और ऐसे बादशाह की हुकूमत में क्यों गए जहाँ उनकी जान को ख़तरा था और जिन लोगों ने उनके बाप और बड़े भाई को शहीद कर दिया था ऐसी हालत में सही यही था कि इमाम हुसैन[अ०] किसी और तरफ चले जाते।

ऐसे लोगों के इन एतेराज़ों का जवाब इतना ही काफ़ी है कि आप ऐसी मौत मरना चाहते थे जिसकी जानकारी हर एक को हो जाए कि किसने शहीद किया। और ज़ुल्म किस की तरफ़ से हुआ, क्योंकि इससे पहले हज़रत अली[अ०] की शहादत हुई, इमाम हसन[अ०] शहीद हुए, मगर कोई पूछताछ नहीं हुई। किसी ने सुराग़ लगाने की तकलीफ़ नहीं उठायी और इन वाक़िआत पर पर्दा डाल दिया गया। इमाम हुसैन[अ०] ने जंग के मैदान में शहीद होकर ये ज़ाहिर कर दिया कि अली[अ०] व हसन[अ०] की शहादत करने वाले कौन थे। हुसैन[अ०] की ऐसी शहादत हुई कि दुनिया क़यामत तक उसे भुला नहीं सकती। ज़ालिम हमेशा ज़ालिम और मज़लूम हमेशा मज़लूम रहेगा और यहीं से हक़ व बातिल की हदें क़ायम हो गईं।

दूसरी लड़ाईयों में आम तौर पर वह जाते थे जो माले ग़नीमत के चाहने वाले होते थे। और जहाँ माल और दौलत की उम्मीद न होती थी, भाग जाते थे लेकिन इमाम ने अपने ऐसे अस्हाब चुने कि जो सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ुशी के चाहने वाले थे। और अपनी जानों को इमाम के क़दमों पर क़ुर्बान करना, अपनी ज़िन्दगी का मक़सद समझते थे। दुनिया लड़ाई के लिए फ़ौज तैयार करती है और सिपाहियों को तरह-तरह की लालच दी जाती है। लेकिन इमाम की फ़ौज इससे मुख़तलिफ़ थी। उनमें बच्चे भी थे, उनमें औरतें भी थीं, उनमें नौजवान भी थे और उनमें बूढ़े भी थे। और इमाम हर मंज़िल पर उनसे कहते जाते थे कि मैं तो क़त्ल होने जा रहा हूँ लोग मेरे ख़ून के प्यासे हैं, तुम लोग वापस चले जाओ, और मेरे साथ ख़तरे में न पड़ो। मगर इमाम के चाहने वाले जानते थे कि किस तरह इज़्ज़त मिलेगी और ख़ुदा की रिज़ा किधर है। जितना इमाम अपनी शहादत की ख़बर देते थे उतना ही जाँबाज़ों की शहादत का शौक़ ज़ोर मारता था और वह मौत को लब्बैक कहते थे।

बहुत से लोग ये कह देते हैं कि इमाम हुसैन[अ०] सियासत नहीं जानते थे। हाँ जिसे हम सियासत समझते हैं उसे वाक़ई आप नहीं जानते थे हमारी सियासत ये है कि धोका किया जाए, मगर इमाम आली मक़ाम उन सभी बुराईयों और इस तरह की सियासत को बुरा जानते थे। वह अपने मक़सद में हर क़दम पर बराबर कामयाब होते रहे। आपकी सियासत क्या थी ये कि हक़ और बातिल में हमेशा के लिए फ़र्क़ हो जाए। बातिल के सामने न सर झुका है और न झुके। इसके उलट यज़ीद की सियासत क्या थी। यही कि इमाम उसके हाथ पर बैअत कर लें, ताकि हरामकारी, फ़रेब और धोका, ज़िनाकारी और ऐय्याशी, सब हलाल और बिल्कुल मज़हब हो जाएं।

इस मौक़े पर इस दुनियावी सियासत को हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ख़ूब जानते थे। आप अपने साथियों के साथ बढ़ रहे थे। पूछा गया कहाँ जा रहे हैं। आपने फ़रमाया कि लोगों ने दावत दी है कि वह हक़ का साथ देंगे और बातिल को छोड़ देंगे।

अगर इमाम इस दावत को क़ुबूल न करते तो आज तक लोग ये कहते कि कैसे इमाम थे, कि बराबर ख़त भेजते जा रहे थे कि आकर अपने नाना के दीन को फैलाएं लेकिन वह अपने ख़ानदान और अपनी जान बचाने की फ़िक्र में थे, और मुसलमानों की दावत क़ुबूल न की।

मगर इमाम जानते थे कि हक़ का रास्ता क्या हैं और उस पर चलने के लिए जानें देना होंगी। और ये यक़ीन रखते थे कि अगर इस रास्ते में अपना पूरा ख़ानदान क़ुर्बान हो जाए और भरा घर उजड़ जाए तो भी कोई हर्ज नहीं। मगर हक़ का रास्ता दुनिया के सामने आ जाए, क्या कहना हुसैन[अ०] की सियासत का, दुश्मन अपने घोड़ों के साथ प्यास की सख़्ती से टूट कर इमाम के सामने आता है। और ऐसे ही मौक़े पर दुनिया की सियासत वाले दुश्मन को हरा देते हैं। बल्कि अगर ये

मालूम हो गया कि फ़लाँ जगह पर घिरा हुआ है तो खाना पानी भी बन्द कर देते हैं ताकि या तो वह मानने वाला हो जाए या तड़प-तड़प कर मर जाए। मगर वाह रे हुसैन[अ०] की सियासत, दुश्मन को भी पानी पिलाया और दुश्मन के घोड़ों को भी पानी से सैराब किया। ये थी हुसैन[अ०] की सियासत मगर एक यज़ीदी सियासत को भी देख लीजिए। सातवीं से इमाम पर इमाम के घर वालों पर और साथियों पर पानी बन्द है। बड़ी फौज ने दरिया पर घेरा डाल रखा है। सवाल ये है कि बैअत करो। या लड़ाई के लिए तैयार हो जाओ उधर 30 हज़ार और इधर गिने गिनाए सिर्फ़ 72 जिनमें एक छः महीने का भी बच्चा है।

आख़िर आशूर की रात आई। इमाम[अ०] ने एक रात की छूट अल्लाह की इबादत के लिए मांगी। सभी जान देने वालों, अज़ीज़ों और दोस्तों को इकटठा किया। और आशूर की मुसीबतों से उन्हें फिर ख़बरादार किया। और ख़्वाहिश की कि जो जाना चाहें वह चला जाय बल्कि बैअत भी उठा ली ताकि जाने वालों में हिचक न हो। जब कोई न गया तो शमा बुझा दी गयी और कहा कि इस रात के अंधेरे में जो जाना चाहे चला जाए। मगर कोई न गया और सब ने कहा कि एक बार क्या अगर सत्तर बार भी क़त्ल किये जाएं। और ज़िन्दा हों तो भी यह जान इन्ही क़दमों पर निछावर करेंगे। ये थी हुसैन[अ०] की सियासत जो दिलों पर हुकूमत कर रही थी कब दुनिया में कोई ऐसी मिसाल मिलती है। मैं सच कहता हूँ कि अगर यज़ीद अपनी फौज़ से कहता कि तुम सब को कल मर जाना है और यक़ीनी मर जाना है और जिसका जी चाहे वह ख़ुशी से चला जाए मुझे बहाना नहीं है तो यक़ीनन चिराग़ बुझाने की ज़रूरत न पड़ती। और पूरी फ़ौज जान बचाकर भाग जाती।

हुसैन[अ०] का मक़सद इस्लाम को बाक़ी रखना था, यज़ीद की बैअत गवारा न की। इज़्ज़त की मौत को ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर तरजीह दी। इसी उसूल पर क़ायम रहे और इसी उसूल पर क़ायम रहने की दावत दी।

इस शहादत ने दुनिया पर ये खोल दिया कि हक़ के रास्ते पर कौन है और बातिल के रास्ते पर कौन। और आज दुनिया की हर क़ौम हुसैन[अ०] को सच्चे रास्ते का शहीद मानती है। और उनके इस क़ौल ''ज़िल्लत की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत बेहतर है'' पर अमल करने को अपना ईमान और असल इन्सानियत समझती है।

+++

(बक़िया....... हुसैन[अ०] कौन थे?)

दुखी स्त्रियों और लावारिस बच्चों का क़ैद होना एक दुख भरी कहानी है, जिसे सुनकर रो देना और मुसीबत की दास्तान पर चार आँसू बहा लेना मनुष्यत्व का कर्तव्य है। जिस आँख से किसी के दुख पर थोड़े आँसू न निकलें, जो दिल किसी के दुख दर्द पर न पसीजे, वह मनुष्य कब हो सकता है। हर मनुष्य इन घटनाओं को सुनकर अवश्य दुखी होगा। हुसैन[अ०] और साथियों के साथ प्रेम और उनके बैरियों से घृणा करेगा। मगर भाइयों यह भी विचार करो कि 'हुसैन[अ०]' ने अपना और अपने मित्रों, अज़ीज़ों और गोद के पाले बच्चों का गला किस बात के लिए कटा दिया।

मित्रों! हुसैन[अ०] ने कर्बला के रणक्षेत्र में बहुत सी शिक्षाएं दी हैं। उन्होंने बतलाया कि सम्मान पूर्वक मृत्यु अपमानजनक जीवन से कहीं बढ़कर है। उन्होंने सिखाया कि सत्यता, ईमानदारी और मनुष्यत्व के लिए प्राण अर्पण कर देना ही जीवन है। यह बताया कि कठिनाइयों और दुखों में दृढ़ रहना और किसी से न घबराना बहादुरी का जौहर है। अन्यायी अत्याचारी का जड़ से खोदकर फेंक देना किन अवसरों पर मनुष्य का कर्तव्य है। उन्होंने सिखाया कि किस प्रकार पाप, बुराई और अन्याय की शक्तियों का नाश किया जाता है। धार्मिक सुशीलता और ईश्वरभक्ति में सर कटा देना महात्माओं का कर्तव्य है।

संसार के सम्मुख किस प्रकार आत्मा का झण्डा ऊँचा किया जाता है। हुसैन[अ०] ने यह भी शिक्षा दी कि जब मनुष्यत्व और सदाचार पर कठिन समय आ पड़े, जब सत्यता को झूठ दबाना चाहे तो बैरियों की अधिकता और शक्ति और अपनी कमी व कमज़ोरी पर ध्यान न देना चाहिए। भाइयों! ये हुसैन की स्वर्णअंकित शिक्षाएं हैं। जो संसार के हर मनुष्य के लिए पालन करना आवश्यक है। हुसैन[अ०] केवल मुसलमानों ही के नहीं किन्तु हमारे जगत गुरु हैं। उनकी कथा का पाठ करना हर धर्मी का कर्तव्य होना चाहिए। प्यारे मित्रों यदि इन सुन्दर शिक्षाओं का पालन करना चाहते हो, यदि ईश्वर भक्ति की शिक्षा लेना हो, तो आओ और सब मिल कर संगठन के प्लेटफार्म पर इकटठे होकर जगत स्वामी मुहम्मद[स०] के नाती हुसैन[अ०] के शरण में आओ और ईश्वर भक्ति मेल-जोल, प्रेम सदाचार की शिक्षा ग्रहण करो। +++